जिला प्रशासन की कमी या सरकार की खरीदी महज दिखावा

11 हजार किसान स्लॉट के इंतजार में, पोर्टल बंद

नवभारत न्यूज

पन्ना 24 मई। किसान हितैषी सरकार में ये कैसा खेल जहां किसान अपनी उपज को बेंचने के लिये कई दिनों से लाइन में लगा है। कहीं स्लाट बुकिंग की समस्या तो कहीं स्लाट निरस्त होने की समस्या तो कहीं पोर्टल बंद होने की समस्या। क्या इसके पीछे सरकार की कोई रणनीति है जिससे खरीदी केन्द्रो में खरीदी नही हो पा रही, या जिला प्रशासन की कोई कमी है।

कारण कुछ भी हो लेकिन यह बात सत्य है कि हजारों किसान जहां मात्र खरीदी के तीन दिन शेष बचे है अपनी कृषि उपज बेंचने को लाईन में लगा है और तीन दिन बाद मजबूरन उसे औने पौने दामों पर व्यापारियों को बेंचना पडेगा। कुल मिलाकर जिले में समर्थन मूल्य पर गेहूं खरीदी व्यवस्था किसानों के लिए बड़ी परेशानी बनती जा रही है। शासन द्वारा गेहूं खरीदी की अंतिम तिथि 28 मई निर्धारित किए जाने के बावजूद जिले के 11 हजार से अधिक किसान अब तक अपनी उपज बेच नहीं पाए हैं। 4 मई से उपार्जन पोर्टल पर स्लॉट बुकिंग बंद होने के कारण किसान लगातार खरीदी केंद्रों और अधिकारियों के चक्कर काट रहे हैं। हालात ऐसे हैं कि पंजीकृत किसानों में से आधे किसान भी अपनी फसल की तुलाई नहीं करा सके हैं। जिले के 44 खरीदी केंद्रों पर इस वर्ष कुल 30,518 किसानों ने पंजीयन कराया था। सरकारी आंकड़ों के अनुसार इनमें से केवल 19,493 किसान ही स्लॉट बुक करा पाए, जबकि अब तक मात्र 14,720 किसानों की फसल की तुलाई हो सकी है। तकनीकी खामियों, सर्वर डाउन और स्लॉट निरस्त होने जैसी समस्याओं के चलते 4,773 किसानों की तुलाई अधर में लटक गई। वर्तमान में 11,025 किसान पोर्टल खुलने का इंतजार कर रहे हैं। बताया गया कि प्रत्येक खरीदी केंद्र की प्रतिदिन गेहूं तौल क्षमता केवल 250 क्विंटल निर्धारित की गई है। यही वजह है कि पोर्टल पर लगातार कैपेसिटी फुल का संदेश दिखाई दे रहा है। सीमित क्षमता के कारण नए स्लॉट जारी नहीं हो पा रहे हैं और खरीदी की प्रक्रिया धीमी पड़ गई है।

मंडी में औने-पौने दाम पर गेहूं बेचने को मजबूर किसान

स्लॉट बुकिंग नहीं होने से परेशान किसान अब निजी व्यापारियों और मंडियों में कम दाम पर गेहूं बेचने को मजबूर हो रहे हैं। किसानों का आरोप है कि सरकारी सिस्टम की सुस्ती और तकनीकी खामियों का फायदा बिचौलिए उठा रहे हैं। खुले बाजार में समर्थन मूल्य से कम दाम मिलने के साथ परिवहन और भंडारण का अतिरिक्त खर्च भी किसानों पर पड़ रहा है, जिससे उन्हें दोहरी आर्थिक मार झेलनी पड़ रही है। कई किसानों का कहना है कि खरीदी केंद्रों पर दिनों तक इंतजार करने के बावजूद नंबर नहीं आ रहा। खेतों और घरों में रखा गेहूं खराब होने का डर भी बढ़ता जा रहा है। भीषण गर्मी और मौसम में बदलाव के बीच किसानों की चिंता लगातार बढ़ रही है।

खरीदी तिथि बढ़ाने और सीमा हटाने की मांग

किसान संगठनों ने मुख्यमंत्री और जिला प्रशासन से तत्काल हस्तक्षेप की मांग की है। किसानों का कहना है कि खरीदी की अंतिम तिथि बढ़ाई जाए और केंद्रों पर प्रतिदिन 250 क्विंटल की सीमा समाप्त की जाए, ताकि सभी किसानों की उपज खरीदी जा सके। किसानों ने चेतावनी दी है कि यदि जल्द पोर्टल चालू नहीं हुआ और खरीदी क्षमता नहीं बढ़ाई गई, तो हजारों किसानों की सालभर की मेहनत बर्बाद हो जाएगी। जिले में गेहूं खरीदी की सुस्त व्यवस्था अब प्रशासन के लिए बड़ी चुनौती बनती जा रही है। अंतिम तिथि नजदीक आने के बावजूद हजारों किसान अपनी उपज लेकर इंतजार कर रहे हैं, लेकिन समाधान अभी तक दूर नजर आ रहा है।

पुलिस ने चोरी की वारदातों का किया खुलासा

नवभारत न्यूज

पन्ना 24 मई। पन्ना पुलिस अधीक्षक श्रीमती निवेदिता नायडू के निर्देशन में देवेंद्रनगर थाना पुलिस को चोरी की दो अलग-अलग घटनाओं का खुलासा करने में बड़ी सफलता मिली है।

थाना प्रभारी देवेन्द्रनगर संतोष यादव के नेतृत्व में गठित पुलिस टीम ने मुस्तैदी दिखाते हुए न केवल वारदातों को अंजाम देने वाले शातिर चोर को दबोचा, बल्कि उसके पास से चोरी गया पूरा माल भी बरामद कर लिया है। पकड़े गए आरोपी ने क्षेत्र में सनसनी फैलाने वाली दोनों चोरियों की बात कबूल कर ली है, जिसके बाद पुलिस ने उसे न्यायालय में पेश किया है। चोरी की पहली वारदात ग्राम रैगढ़ से सामने आई थी, जहाँ फरियादी धर्मेन्द्र रैकवार उर्फ बिन्दा ने रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि उसके पड़ोसी गोविंद उर्फ रामकलेश ढीमर ने घर में घुसकर उसकी पत्नी के सोने-चांदी के गहने पार कर दिए हैं। चोर घर से करीब एक तोला वजनी सोने का मंगलसूत्र और दो तोला चांदी की पायल समेत ले गया था, जिसकी अनुमानित कीमत 1,54,000 बताई गई थी। पुलिस ने शिकायत मिलते ही बीएनएस की विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज कर जांच शुरू की थी। वहीं चोरी की दूसरी घटना विधायक कॉलोनी निवासी शिवदयाल बागरी के साथ हुई, जिनके ग्राम इटमा स्थित खेत के बोर घर का ताला तोड़कर अज्ञात चोर सिंचाई के काम में आने वाले 10 प्लास्टिक पाइप और एक स्प्रेयर टंकी मशीन चुरा ले गया था। इस मामले में भी पुलिस ने अपराध दर्ज कर तफ्तीश तेज कर दी थी। इसी दौरान मिली सटीक सूचना के आधार पर पुलिस ने संदेही गोविंद उर्फ रामकलेश ढीमर उम्र 24 वर्ष निवासी रैगढ़ को हिरासत में लेकर कड़ाई से पूछताछ की। उसने दोनों चोरियों की वारदात को अंजाम देना स्वीकार कर लिया। पुलिस ने आरोपी की निशानदेही पर सोने-चांदी के आभूषण, चोरी का अन्य सामान और नकदी सहित कुल 1,55,000 का मशरूका जब्त कर लिया है।

पन्ना टाइगर रिजर्व में गिद्धों की संख्या में ऐतिहासिक वृद्धि

बाघों की आबादी के बराबर पहुंचा आंकड़ा

नवभारत न्यूज

पन्ना 24 मई। पन्ना टाइगर रिज़र्व से वन्यजीव प्रेमियों और पर्यावरणविदों के लिए एक बेहद उत्साहजनक और बड़ी खुशखबरी सामने आई है। पन्ना टाइगर रिज़र्व में हाल ही में संपन्न हुई तीन दिवसीय ग्रीष्मकालीन गिद्ध गणना के परिणाम बेहद सुखद रहे हैं, जिसने संरक्षण के क्षेत्र में एक नया इतिहास रच दिया है।

पार्क प्रबंधन द्वारा जारी आधिकारिक आँकड़ों के मुताबिक, इस बार रिज़र्व में गिद्धों की आबादी में 54 की उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। इस बढ़ोतरी के साथ ही पन्ना टाइगर रिज़र्व ने एक अनूठी और ऐतिहासिक उपलब्धि अपने नाम कर ली है। अब यहाँ गिद्धों की कुल संख्या मध्य प्रदेश के कुल बाघों की संख्या के ठीक बराबर पहुँच गई है, जो कि रिज़र्व के बेहतरीन पर्यावरण और सुरक्षा उपायों की बड़ी सफलता को प्रमाणित करता है। डिजिटल गणना के इस ग्रीष्मकालीन सत्र के तहत सामने आए सांख्यिकीय आँकड़ों को देखें तो वन्यजीवों के इस कुनबे में अब कुल 785 गिद्ध शामिल हैं। यदि पिछले वर्ष के रिकॉर्ड से इसकी तुलना करें, तो ग्रीष्मकालीन सत्र 2025 में यहाँ गिद्धों की कुल संख्या 731 दर्ज की गई थी, जिसमें अब इजाफा हो चुका है। इस कुल आबादी में उम्र के लिहाज से वयस्क और उप-वयस्क गिद्धों की स्थिति भी काफी मजबूत है। रिज़र्व में वर्तमान में कुल 742 वयस्क गिद्ध और 43 उप-वयस्क गिद्ध पाए गए हैं, जो भविष्य में इनकी आबादी को और स्थिरता देने का संकेत हैं। प्रजातिवार औसत के नजरिए से देखें तो पन्ना का यह आसमान अलग-अलग दुर्लभ प्रजातियों के गिद्धों से गुलजार हो रहा है।

रिज़र्व में सबसे बड़ी तादाद भारतीय गिद्धों की है, जिनकी संख्या 604 मापी गई है। इसके बाद दूसरे स्थान पर मिस्र के गिद्ध हैं, जिनकी मौजूदगी का आँकड़ा 46 है। इसी तरह सफेद-पीठ वाले गिद्धों की संख्या भी 43 दर्ज की गई है। आसमान के सिकंदर कहे जाने वाले और बेहद कम दिखने वाले राज गिद्धों की संख्या भी यहाँ 21 पाई गई है। गिद्धों की विभिन्न प्रजातियों का यह फलता-फूलता संसार यह साबित करता है कि पन्ना टाइगर रिज़र्व का ईकोसिस्टम इन संकटग्रस्त पक्षियों के अनुकूल और पूरी तरह सुरक्षित है।

दक्षिण वन मण्डल में ग्रीष्मकालीन गिद्ध गणना हुई

औसतन 836 गिद्ध दर्ज

नवभारत न्यूज

पन्ना 24 मई। गिद्ध संरक्षण के क्षेत्र में दक्षिण पन्ना वनमण्डल ने इस बार गणना में औसतन 836 गिद्ध दर्ज किए गए हैं, जो गर्मियों के मौसम में बीते कई दशकों का सबसे बड़ा आंकड़ा है। इस गणना के पहले दिन 869, दूसरे दिन 847 और तीसरे दिन 792 गिद्धों की मौजूदगी दर्ज की गई। अगर पिछले साल के आंकड़ों पर नजर डालें, तो अप्रैल 2025 में हुई ग्रीष्मकालीन गणना के दौरान यह संख्या महज 575 थी।

यानी सिर्फ एक साल के भीतर ही गिद्धों की आबादी में यह इजाफा हुआ है। वन्यजीव विशेषज्ञों के मुताबिक गर्मियों में अमूमन गिद्धों की संख्या सर्दियों के मुकाबले काफी कम हो जाती है क्योंकि कई विदेशी और प्रवासी प्रजातियां मार्च-अप्रैल के महीने में भारत छोड़कर वापस अपने मूल ठिकानों की ओर उड़ान भर लेती हैं। फरवरी 2026 में हुई शीतकालीन गणना के दौरान इस इलाके में गिद्धों की कुल सात प्रजातियां देखी गई थीं। इनमें से हिमालयन ग्रिफन, यूरेशियन ग्रिफन और सिनेरेयस यानी ब्लैक वल्चर जैसी प्रवासी प्रजातियां शामिल थीं, जो सर्दियों में मध्य भारत में डेरा डालती हैं और गर्मी आते ही वापस पर्वतीय और मध्य एशियाई देशों की तरफ लौट जाती हैं। यही वजह रही कि मौजूदा ग्रीष्मकालीन गणना में मुख्य रूप से चार स्थानीय प्रजातियां ही सामने आईं। इनमें देसी यानी लॉन्ग-बिल्ड, सफेद यानी इजिप्शियन, व्हाइट-रम्प्ड और रेड-हेडेड यानी किंग वल्चर शामिल हैं। इस बार की गणना में देसी और सफेद गिद्धों का दबदबा सबसे ज्यादा देखने को मिला है। इसके साथ ही नए गिद्ध बाहुल्य इलाकों की खोज, उनके घोंसलों की चौबीस घंटे निगरानी और संवेदनशील वन क्षेत्रों में गश्त बढ़ा दी गई। इस बार की गिद्ध गणना तकनीकी रूप से भी बेहद खास रही। वन विभाग ने पहली बार डेटा एंट्री के लिए एक विशेष मोबाइल ऐप का इस्तेमाल किया, जिससे गणना से जुड़ी सभी जानकारियां डिजिटल रूप में दर्ज हुईं। इस आधुनिक कदम से आने वाले समय में गिद्धों की संख्या, प्रजातिवार फैलाव और उनके रहन-सहन का सटीक वैज्ञानिक विश्लेषण करने में बड़ी मदद मिलेगी।

इस पूरे अभियान को अमलीजामा पहनाने में मैदानी वनकर्मियों ने दुर्गम और कठिन रास्तों पर पैदल चलकर अपनी जान जोखिम में डाली। इस दौरान टीम को गिद्ध विशेषज्ञ दिलशेर खान का बेहतरीन तकनीकी मार्गदर्शन भी मिला। प्रकृति के सबसे बड़े सफाईकर्मी कहे जाने वाले गिद्ध मृत पशुओं के अवशेषों को चंद घंटों में साफ कर देते हैं, जिससे पर्यावरण में फैलने वाले घातक बैक्टीरिया और महामारियों पर लगाम लगती है।

पेयजल के लिये टंकिया रखने के बाद भी नहीं भरा गया पानी

नवभारत न्यूज

पन्ना 24 मई। भीषण गर्मी के बीच नगर परिषद गुनौर की पेयजल व्यवस्था सवालों के घेरे में आ गई है। वार्ड क्रमांक 8, 10 और 11 के लोगों को राहत देने के लिए पीडब्ल्यूडी कार्यालय के पास रखवाई गई बड़ी पानी की टंकी पानी के न भरने से केवल दिखावा बनकर रह गई है।

इन वार्डों में लंबे समय से लो वोल्टेज की गंभीर समस्या बनी हुई है। टैंकरों के माध्यम से पानी सप्लाई शुरू करने की बात कही गई थी। इसके बाद क्षेत्र में पानी की बड़ी टंकी भी रखवा दी गई। टंकी तो रखवाई गई लेकिन उसमें आज तक पानी ही नहीं भरा गया है।

वार्डों में नहीं पहुंच पा रहे टैंकर - करीब एक महीना गुजरने के बाद भी एक भी टैंकर टंकी तक नहीं पहुंचा। पानी के लिए महिलाओं, बुजुर्गों और बच्चों को दूर-दूर तक भटकना पड़ रहा है। कई परिवार निजी साधनों से पानी मंगाने को मजबूर हैं। क्षेत्रवासियों में नगर परिषद की कार्यप्रणाली को लेकर नाराजगी बढ़ती जा रही है। स्थानीय नागरिकों ने प्रशासन से जल्द नियमित टैंकर आपूर्ति शुरू कराने और पेयजल संकट दूर करने की मांग की है। लोगों का कहना है कि भीषण गर्मी में पानी जैसी मूलभूत जरूरत की अनदेखी गंभीर लापरवाही है और जिम्मेदार अधिकारियों को इस पर तुरंत कार्रवाई करनी चाहिए।

सीसीएफ यादव ने किया दक्षिण पन्ना में तेंदूपत्ता संग्रहण कार्य का निरीक्षण

नवभारत न्यूज

पन्ना 24 मई। छतरपुर वृत्त के मुख्य वन संरक्षक नरेश सिंह यादव द्वारा दक्षिण पन्ना वनमण्डल अंतर्गत संचालित तेंदूपत्ता संग्रहण कार्यों का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने वन परिक्षेत्र मोहन्द्रा की प्राथमिक लघुवनोपज सहकारी समिति के फड़ मोहन्द्रा पहुंचकर संग्रहण व्यवस्था, गुणवत्ता नियंत्रण एवं अभिलेखों का अवलोकन किया।

इस अवसर पर वनमण्डलाधिकारी दक्षिण पन्ना, वन परिक्षेत्राधिकारी मोहन्द्रा, नोडल अधिकारी देवी सिंह यादव, फड़ अभिरक्षक श्रीमती संगीता अहिरवार सहित विभागीय अमला उपस्थित रहा। निरीक्षण के दौरान सीसीएफश्री यादव ने संग्राहकों से संवाद कर तेंदूपत्ता संग्रहण से जुड़ी व्यवस्थाओं की जानकारी भी प्राप्त की। फड़मुंशी द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार मोहन्द्रा फड़ अंतर्गत 301 संग्राहक पंजीकृत हैं तथा लगभग 600 मानक बोरा संग्रहण का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। दिनांक 22 मई तक लगभग 165 मानक बोरा तेंदूपत्ता संग्रहित किया जा चुका था। निरीक्षण के दौरान मुख्य वन संरक्षक द्वारा कटे-फटे, छोटे एवं निम्न गुणवत्ता वाले पत्तों को पृथक रखने तथा केवल उच्च गुणवत्ता वाले बीड़ी योग्य तेंदूपत्तों का संग्रहण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। उन्होंने संग्रहण कार्य में पारदर्शिता एवं गुणवत्ता बनाए रखने पर विशेष बल दिया। उल्लेखनीय है कि दक्षिण पन्ना वनमण्डल में इस वर्ष लगभग 17,400 मानक बोरा तेंदूपत्ता संग्रहण का लक्ष्य निर्धारित किया गया है, जिसके विरुद्ध अब तक 13,284 मानक बोरा से अधिक तेंदूपत्ता संग्रहित किया जा चुका है, जो निर्धारित लक्ष्य का लगभग 76 प्रतिशत है।

इस वर्ष दक्षिण पन्ना की सभी 14 समितियों के तेंदूपत्ता लॉट्स की नीलामी में रिकॉर्ड औसत दर 5261 प्रति मानक बोरा प्राप्त हुई है। शासन द्वारा संग्राहकों को 4000 प्रति मानक बोरा की दर से पारिश्रमिक प्रदान किया जा रहा है, जिससे हजारों ग्रामीण एवं आदिवासी परिवारों को प्रत्यक्ष आर्थिक लाभ प्राप्त होगा।

मधुमक्खियों के संरक्षण के लिए की गई जल व्यवस्था

नवभारत न्यूज

पन्ना 24 मई। भीषण गर्मी और लगातार बढ़ते तापमान के बीच दक्षिण पन्ना वनमण्डल के रैपुरा वन परिक्षेत्र में मधुमक्खियों के लिए विशेष जल व्यवस्था सुनिश्चित की गई है। दक्षिण पन्ना वनमण्डल के अंतर्गत रैपुरा वन परिक्षेत्र की सागौनी, भरतला, चमरैया, जमुनिया एवं बघनरवा बीटों में पारंपरिक जल स्त्रोतों झिरिया का निर्माण एवं पुरानी झिरियों की मरम्मत का कार्य किया गया।

इन प्रयासों के परिणामस्वरूप भीषण गर्मी के दौरान भी वन क्षेत्रों में जल उपलब्धता बनी हुई है, जिससे मधुमक्खियों सहित अनेक छोटे वन्यजीवों को राहत मिल रही है। इन जल स्त्रोतों के आसपास बड़ी संख्या में मधुमक्खियों के छत्ते सक्रिय रूप से देखे जा रहे। सामान्यत: खुले अथवा गहरे जल स्त्रोतों पर पानी पीते समय मधुमक्खियां डूबकर मर जाती हैं। इसे रोकने के लिए जल स्त्रोतों की उथली जगहों पर छोटे पत्थर एवं सूखी लकड़ियों की डंडियां रखी गई हैं, ताकि मधुमक्खियां उन पर सुरक्षित बैठकर बिना किसी खतरे के पानी पी सकें।

दो साल बाद भी नहीं बन पाई बृहस्पति कुंड से पनारी तक की सड़क

नवभारत न्यूज

पन्ना 24 मई। पन्ना विकासखंड अंतर्गत बृजपुर क्षेत्र में स्थित बृहस्पति कुंड से ग्राम पनारी तक पक्की सड़क निर्माण कार्य करीब एक साल से बंद पड़ा हुआ है।

राज्य खनिज प्रतिष्ठान मद से पोषित लगभग 8.50 किलोमीटर सड़क में ठेकेदार द्वारा निर्माण के लिए डाली गई मुरुम के ऊपर गिट्टी पूरे सड़क मार्ग में उखड़ी पड़ी हुई है। जिसके चलते क्षेत्रीय ग्रामीणों राहगीरों के साथ ही वाहन चालकों को गिट्टी के ऊपर से आवाजाही के दौरान भारी परेशानी उठानी पड़ रही है। दो पहिया और चार पहिया वाहन सड़क में उखड़ी पड़ी गिट्टी के चलते जहां क्षतिग्रस्त हो रहे है। वहीं कई बार दो पहिया व चार पहिया वाहन के टायर गिट्टी की वजह से पंचर हो जाते हैं तो समस्या और बढ़ जाती है। इसके साथ ही मार्ग में वाहन दुर्घटनाग्रस्त भी हो रहे हैं। सड़क का काम बरसात से पहले ही पूरी तरह से बंद पड़ा हुआ है किन्तु सड़क का निर्माण कार्य पूरा करने को लेकर न तो ठेकेदार गंभीर है और न ही संबंधित विभाग के जिम्मेदारी अधिकारी लोगों को होने वाली परेशानियों को दूर करने को लेकर किसी भी तरह के प्रबंध नहीं कर रहे हैं।

जानकारी के अनुसार बृहस्पति कुंड जिसे पन्ना जिले के पर्यटक स्थल के रूप में स्थापित करने को लेकर लगातार प्रयास हो रहे हैं, निर्माण एजेंसी प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना द्वारा 3 करोड़ 92 लाख 54 हजार की लागत वाली सड़क के निर्माण के लिए टेंडर की कार्यवाही करते हुए ठेकेदार संतोष कुमार गुप्ता को निर्माण कार्य की जिम्मेदारी सौंपी गई।

1 साल में पूरा होना था सड़क का निर्माण कार्य

राज्य खनिज प्रतिष्ठान मद से प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना क्रियान्वन इकाई पन्ना द्वारा सड़क निर्माण कार्य के लिए पूर्णाता की अवधि 27 दिसम्बर 2024 निर्धारित की गई थी। सड़क का निर्माण कार्य 28 दिसम्बर 2023 को स्वीकृत हुआ था अर्थात करीब एक वर्ष की अवधि के दौरान बृहस्पति कुंड से पनारी तक की सड़क का निर्माण कार्य पूरा हो जाना चाहिए था जिसकी समय सीमा को समाप्त हुए करीब सवा साल पूरे हो चुके हैं किन्तु 39.94 लाख की लागत वाली सड़क अधूरी पड़ी हुई है।

संविदा अधिकारी-कर्मचारी हो रहे अंधेर नगरी चौपट राजा के शिकार

नवभारत न्यूज

पन्ना 24 मई। शासन ने सोची समझी रणनीति के तहत संविदा अधिकारी-कर्मचारियों की साजिस भरी नौकरी का नव निर्माण किया था लेकिन जैसा कि कहावत है कि लीक-लीक तीनों चले कायर कुटिल कपूत, लीक तीनों चले शायर सिंह सपूत।

इस सरकार ने भी वही हथकण्डा अपनाया और संविदा नौकरी के नाम का ऐसा ताण्डव रचा गया कि आज पूरे मध्यप्रदेश में हर विभाग में चाहे वह पंचायत, ग्रामीण विकास विभाग हो या चाहे महिला बाल विकास, स्वास्थ्य विभाग, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग आलम यह है कि यदि कोई भी विभाग हो हर जगह संविदा ही संविदा कर्मचारी है। पूरे प्रदेश में 30 लाख से ज्यादा कर्मचारी होंगे और उनके साथ पल रहे प्रति कर्मचारी 4-6 परिवार के सदस्य यानि की लगभग दो करोड़ पंदह लाख लोगों का सहारा ये कर्मचारी है। लेकिन शासन के हिटलरशाही रवैये के चलते आज इन कर्मचारियों की स्थिति इतनी भयावह हो गयी है कि सुनने मात्र से रोंगटे खड़े हा जाएं या रूह कांप जाएं, चाहे वे अधिकारियों की प्रताड़ना रही हो या अपने आपको समाज का हितैषी या सेवक कहने वाले समाज सेवी हों।

दो दिवसीय आधार महाअभियान 25 व 26 को

भारतीय डाक विभाग सतना संभाग द्वारा आम नागरिकों को आधार संबंधी सेवाओं का लाभ प्रदान करने के उद्देश्य से आगामी 25 एवं 26 मई को पन्ना मुख्य डाकघर एवं अजयगढ़ उप डाकघर में दो दिवसीय विशेष आधार महाअभियान आयोजित किया गया है। इस दौरान आधार केंद्र संचालन का समय सुबह 8 बजे से शाम 6 बजे तक निर्धारित है। जनहित में प्रधान डाकघर में यह सुविधा रात्रि 8 बजे तक उपलब्ध रहेगी। केंद्रों पर नागरिकों की सुविधा के लिए पेयजल, छाया और बैठने की भी समुचित व्यवस्था की गई है। इस अवसर पर नागरिक अपने आधार कार्ड में नया नामांकन और अपडेशन आसानी से करवा सकेंगे।

देवेंद्रनगर - ककरहटी मार्ग गड्ढों में तब्दील

नवभारत न्यूज

पन्ना 24 मई। प्रधानमंत्री सड़क योजना के तहत बनी देवेंद्रनगर-ककरहटी मुख्य सड़क इन दिनों बदहाल स्थिति में पहुंच गई है। जगह-जगह बड़े गड्ढे और उखड़ी सड़क लोगों के लिए मुसीबत बन चुकी है।

हालात ऐसे हैं कि इस मार्ग पर हर दिन दुर्घटनाओं का खतरा बना रहता है, वहीं उड़ती धूल ने आसपास के वार्डवासियों का जीना दूभर कर दिया है। देवेंद्रनगर कृषि उपज मंडी के पास से गुजरने वाली यह सड़क क्षेत्र के कई गांवों को जोड़ने वाला प्रमुख मार्ग है। रोजाना भारी वाहनों और लगातार बढ़ते आवागमन के कारण सड़क पूरी तरह जर्जर हो चुकी है। सड़क पर बने गहरे गड्ढों से वाहन चालक संतुलन खो रहे हैं और छोटे वाहन चालक हादसों का शिकार हो रहे हैं। राहगीरों और दोपहिया वाहन चालकों को सबसे ज्यादा परेशानी उठानी पड़ रही है। स्थानीय नागरिकों का कहना है कि सड़क लंबे समय से खराब हालत में है, लेकिन प्रधानमंत्री सड़क योजना से जुड़े अधिकारी और जिम्मेदार कर्मचारी इस ओर ध्यान नहीं दे रहे। सड़क की मरम्मत नहीं होने से दिनभर धूल के गुबार उड़ते रहते हैं।

जिससे आसपास के वार्डों में रहने वाले लोगों को सांस संबंधी बीमारियों और एलर्जी का खतरा बढ़ गया है। लोगों का आरोप है कि कई बार शिकायत किए जाने के बावजूद अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई।

सड़क की मरम्मत कराए जाने की मांग - क्षेत्रवासियों ने पन्ना कलेक्टर से सड़क की तत्काल मरम्मत कराने, गड्ढे भरवाने और नियमित पानी का छिड़काव कराने की मांग की है, ताकि धूल और दुर्घटनाओं से लोगों को राहत मिल सके। वार्डवासियों का कहना है कि प्रधानमंत्री सड़क योजना के तहत बनी सड़क यदि समय पर मरम्मत और देखरेख न मिलने से इस स्थिति में पहुंच रही है, तो यह जिम्मेदार विभागों की कार्यप्रणाली पर भी सवाल खड़े करता है। अब लोगों को प्रशासनिक हस्तक्षेप का इंतजार है।

एसडीएम तहसीलदार की समझाइए से आउटसोर्स कर्मचारी की हड़ताल समाप्त

नवभारत न्यूज

अजयगढ़ 24 मई। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र अजयगढ़ में आउटसोर्स कर्मचारी अपनी विभिन्न मांगों को लेकर हड़ताल पर चले गए थे, जिससे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र उप स्वास्थ्य केंद्र आदि जगहों पर सुरक्षा सफाई रसोईया सपोर्ट स्टाफ सहित सारे कार्य प्रभावित होने लगे, जिसकी शिकायत तहसीलदार सुरेंद्र कुमार से की गई।

उन्होंने प्रभार में रह रहे एसडीएम संजय नागवंशी को इस विकराल समस्या से अवगत कराया, तब एसडीएम तुरंत अजयगढ़ पहुंचे और तहसीलदार सुरेंद्र कुमार के साथ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में आउटसोर्स कर्मचारी संघ जो हड़ताल पर था उनसे मिले, उनकी समस्याएं सुनी।

हड़ताल में बैठे कर्मचारियों द्वारा बताया गया कि स्काईवुल सिक्योरिटी सर्विस के अंतर्गत अजयगढ़ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सहित अन्य उप स्वास्थ्य केंद्रो में लगभग 50 से 60 महिला पुरुष कर्मचारी इस संस्था के तहत कार्य कर रहे हैं जो सफाई सुरक्षा गार्ड रसोईया सपोर्ट स्टाफ के तहत भर्ती की गई है जिनके साथ भेदभाव किया जा रहा है। अधिक पैसों में हस्ताक्षर करवा कर कम पैसे दिए जा रहे हैं एवं श्रम विभाग के नियमों का पालन नहीं किया जा रहा। बीमा का मानदेय, ज्यादा में हस्ताक्षर भुगतान कम, बोनस, सप्ताहिक अवकाश जैसी मांगे आउटसोर्स कर्मचारी ने एसडीएम एवं तहसीलदार के सामने बताई। स्काईवुल सिक्योरिटी सर्विस के प्रतिनिधि को तत्काल मौके पर बुलाया गया और कर्मचारियों के समक्ष बात रखी गई। और स्काईबुल सिक्योरिटी सर्विस के प्रतिनिधि द्वारा लिखित में आश्वासन दिया गया की 14 जून को प्रशासनिक अमले के साथ आउटसोर्स कर्मचारी और स्काईवुल सिक्योरिटी सर्विस की मीटिंग की जाएगी। जिसमें सारे दस्तावेज कर्मचारियों के और स्काईबुल सिक्योरिटी के तहसीलदार सुरेंद्र कुमार के सामने रखकर इसका निराकरण किया जाएगा। तब आउटसोर्स कर्मचारी अपने काम पर वापस गए और अस्पताल की सफाई सुरक्षा जैसा काम सम्हाला। वहीं एक कर्मचारी द्वारा बताया गया कि स्काईवुल सिक्योरिटी सर्विस के लोग कई बार लिखित एवं मौखिक शिकायत के बाद कोई सुनवाई नहीं कर रहे थे, इस बार प्रशासनिक हमले की हस्तक्षेप के बाद उन्होंने हमारी बात सुनी है।